छ़ठा अध्याय

''रियाज़ की आदर्श बोलपंक्तियाँ एवं बंदिशेः विविध घरानों की दृष्टिकोन से ''

प्रस्तावना :

प्रस्तुत अध्याय में शोधार्थी ने, तबले के विविध घरानों की दृष्टिकोन से रियाज़ की आदर्श बोलपंक्तियाँ एवं बंदिशों का विचार सामने रखने का प्रयास किया है।

तबले के प्रमुख छह घराने है;

दिल्ली, अजराड़ा, लखनौ, फर्रूखाबाद, बनारस तथा पंजाब घराना।

शोधार्थी के गुरु पं. आमोद दंडगे इनके विचार से, तबले के यह छह घराने याने तबले की ओंर देखने के छह अलग दृष्टिकोन है। प्रत्येक घरानें की अपनी वादन विशेषता है तथा अलग–अलग वादनशैली है। साथ ही, तबले की भाषा का उचित प्रयोग एवं साहित्य संपन्नता, इन प्रत्येक घरानों की विशेषता रही है। इसके साथ–साथ तबले के प्रत्येक घरानों ने तबले के रियाज़ के बारे में अपना–अपना आदर्श विचार रखा है, जो तबला जगत की सबसे बड़ी उपलब्धि भी है। तबले के घरानों का प्रतिनिधित्व करनेवाले विद्वान एवं मूर्धन्य कलाकारों ने यथासमय रियाज़ के बारे मे अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देकर वर्तमान पिढी का ज्ञानवर्धन किया है, साथ ही तबले की श्रीमंती भी बढ़ायी है। उदाहरण तौर पर, तबले के रियाज़ में 'मुरक्का' वादन पध्दति यह फर्रूखाबाद घरानों के तबलावादको की अनमोल भेट है, जो तबलाजगत को मिली है। तबले की साहित्य समृध्दता कों बढ़ाने के साथ–साथ, विद्वानों ने तबले के रियाज़ के बारे में भी अपने–अपने विचार रखे है तथा प्रत्यक्ष वादन कृति के लिए रियाज़ हेतू आदर्श बोलपंक्तियाँ एवं बंदिशों की रचनाभी की है। तबलावादन के प्रति विद्वानों द्वारा ली गयी यह अथक मेहनत एवं उनका योगदान कभी भी भूलाया नहीं जा सकता। इतना ही नहीं, बल्कि उनके द्वारा किया गया यह असामान्य कार्य तबला जगत में चिरंतन बन

गया है तथा वर्तमान पीढी के लिए एक प्रेरणास्त्रोत बन गया है। वर्तमान में, तबले के विद्यार्थीयों ने विद्वानों द्वारा किए गए इस कार्य का स्वागत करते हुए उसका स्वीकार करना चाहिए, तथा तद्अनुसार वादन एवं आचरण करना चाहिए, ऐसा शोधार्थी का मानना है।

6.1. आदर्श बोलपंक्ति एवं बंदिशः अर्थ :

तबले के विद्वानों ने प्रत्यक्ष वादन के साथ–साथ रियाज़ हेतू विविध बोलपंक्तियों की रचना की है। प्रत्यक्ष वादन एवं रियाज़ दोनों ही में यह बोलपंक्तियाँ महत्वपूर्ण होती है, इसलिए इन बोलपंक्तियों को 'आदर्श बोलपंक्ति' कहा जाता है।

आदर्श बोलपंक्ति का उदाहरण :–

तिरकिट तकतिर किटतक ताऽतिर

किटतक तिरकिट तकताऽ तिरकिट

उपर्युक्त बोलपंक्ति के रियाज़ से 'तिरकिट– तथा 'किटतक' बोलोंपर वादन में सहजता एवं स्पष्टता पायी जा सकती है। इसी बोलपंक्ति के आधार से हम, बंदिश का अगर विचार करें, तो इस बोलपंक्ति कों तुकडा के रूप में हम प्रस्तुत कर सकते है, जैसे–

तिरकिट तकतिर किटतक ताऽतिर किटतक तिरकिट तकताऽ तिरकिट

धाऽऽऽ तिरकिट तकताऽ तिरकिट धाऽऽऽ तिरकिट तकताऽ तिरकिट $_x$धा

इस प्रकार, उपर्युक्त आदर्श बोलपंक्ति के रियाज़ से हमें 'तुकडा' इस बंदिश के वादन में सहजता प्राप्त हो सकती है, ऐसा शोधार्थी का विचार है।

बंदिश याने परिपूर्ण तथा अर्थपूर्ण रचना होती हैं। कायदा, रेला, तुकडा, चक्रदार, तिहाई, आदि तबले के विविध रचनाएँ तबले की बंदिशे होती हैं।

बोलपंक्तिः

तिरकिट तिरकिट धाधा तिरकिट

धाऽतिर किटतिर किटधाऽ तिरकिट

बंदिश : रेला (रचना– गुरुवर्य पं. अरविंद मुलगांवकरजी) – तीनताल

xतिरकिटतिरकिट धाधातिरकिट धातिरकिटतिर किटधाऽतिरकिट।

2तकधाऽतिरकिट धाऽतिरकिटतिर किटधाऽतिरकिट तींनाकिडनग। + खाली

इस तरह, हमे आदर्श बोलपंक्ति एवं बंदिश का परस्परसंबंध समझ में आता है।

6.2. घराना एवं बंदिशः परस्परसंबंध :

घराना एवं बंदिश का बड़ाही पूरक परस्परसंबंध है। विद्वानो द्वारा रचित विभिन्न बंदिशोसे ही घरानों की पहचान बनती है। बंदिश यह घरानें की एक मूल पहचान होती है, जो संबंधित घरानों की वादनशैली की नींव होती है। घराणेदार बंदिश में उस घराने की वादनशैली एवं विचार निहित होते है। तबले की एखाद रचना जब विचारपूर्णता से किसी विद्वान द्वारा निर्माण होती है, तब उस रचना को बंदिश कहा जाता है, ऐसा शोधार्थी का विचार है। बंदिश की रचना के पीछे विद्वानों की विचार प्रगल्भता और उनके द्वारा ली गयी अथक मेहनत होती है। इस तरह, घराना एवं बंदिश, यह दोनो भी एक–दुसरे से जुड़े हुए होते है।

घरानेदार बंदिशों के वादन में वादक का रियाज़ झलकता है। इसका मतलब यह है की, बंदिशों को सही न्याय मिलता है, केवल रियाज़ी हाथ से ही। इस प्रकार, बंदिशों के वादन में रियाज़ का अनन्यसाधारण महत्त्व हैं।

दिल्ली में हुई राष्ट्रीय तबला संगोष्ठी में शोधार्थी ने अपना संशोधनपत्र प्रस्तुत किया था, इसी संगोष्ठी में ज्येष्ठ शास्त्रीय गायिका विदुषि श्रुति सड़ोलीकर काटकरजी ने अपने वक्तव्य में रियाज़ के बारे में कहा था। (दि. 16 नवंबर 2019)

''प्रत्येक गायक–वादक कलाकार के जीवन का लक्ष्य होना चाहिए–रियाज़। संगीत और ईश्वर दोनों भी अमूर्त चीजे है, जिनका अनुभव केवल रियाज़ से एकनिष्ठ रहकर ही हो सकता है। पहले कुछ वर्षोका प्रारंभिक तथा महत्त्वपूर्ण रियाज़ गुरू के सन्मुख ही होना जरूरी हैं। संगीत की घराणेदार मूल्यों का, तत्त्वों का जतन तथा रक्षण केवल रियाज़ से ही संभव है।''[1]

विदुषि श्रुति सड़ोलीकरजी उपर्युक्त विचारधारा घराना एवं बंदिश इन मूलतत्वों का महत्व दर्शाती है।

उदाहरणः लखनौ घराने की एक बंदिश –

गत – तीनताल

x दिनतक   दिनतक   तकदिन   नागेतीट।

घिडनग   दिनतक   तीटकता   किडनग।

0 धीनगिन   धागेत्रक   तीनगिन   नागेतीट।

घिडाऽन   नक्धेत्   ऽधीरधीर   कत्ऽऽ।

उपर्युक्त गत लखनौ घरानें की प्रसिध्द गत है, जिसकी रचना लखनौ घराने के संस्थापक उस्ताद मियाँ बक्शुजी ने की हैं।

6.3. बंदिश का महत्त्व एवं स्थान, घरानों की दृष्टिकोन से :

उदाहरणः – गततुकडा – रूद्र ताल (फर्रूखाबाद घराना)

x दिंगदिनागिन   दिंगदिनागिन

धात्रकधिकिट   दिंगदिनागिन   0 घडाऽनघडाऽन

ताकेतिरकिटतकऽऽ   घेऽतिरकिटतकतक्डॉड्न्

धाऽऽऽ   घेऽतिरकिटतकतक्डॉऽन्   धाऽऽऽ   घेऽतिरकिटतकतक्डाऽन्   x धीं

तीनताल–रेला (लखनौं घराना)

x घिडनग घिडनग तकतक घिडनग

2 तकघिड नगतक घिडनग घिडनग2

और खाली

(उपर्युक्त दोनो रचनाएँ – जेष्ठ तबलावादक श्री. महेश पाटील गुरुजी, इचलकरंजी इन से साभार प्राप्त)

उपर्युक्त रचनाओं में प्रथम बंदिश फर्रूखाबाद घराने की रचना है तथा दुसरी रचना लखनौं घराने की है। दोनों रचनाओं में घराने के आधार पर तथा घराने के अनुशासन में रहकर प्रस्तुत रचना की निर्मिती की गयी है, जिसमें तबले की भाषा का सौंदर्य नजर में आता है। इस तरह, देखा जाए तो घराने का सौंदर्य उसमें निहित बंदिशों में होता है। बंदिश एवं उसमें निहित भाषा सौंदर्य को देखते हुए, हमे उनके रियाज़ का महत्व दिखाई देता है। तबले की विविध सौंदर्यपूर्ण बंदिशे ही

प्रत्येक घरानों की सही पहचान है। भाषा एवं विचार से ही बंदिशे पूर्ण रूप से साकार होती है। तबले की घरानों के विद्वान कलाकारों ने अपनी विचार प्रगल्भता से ऐसी अगणित रचनाएँ एवं बंदिशों की निर्मिती करके तबला जगत पर अनंत उपकार किए है।

शोधार्थी का मानना है की, विद्यार्थीयों ने रियाज़ हेतू पारंपारिक एवं घरानेदार बंदिशों को प्रधानता देनी चाहिए तथा तद्अनुसार रियाज़ करना चाहिए।

6.4. रियाज़ एंव बंदिशः परस्पर संबंध तथा महत्त्व :

जैसा की शोधार्थी ने पहले कहा, बंदिश याने तबलावादन की मूल रचना, जैसे– कायदा, रेला, गत, आदि। तबलावादन के रियाज़ में बंदिश का अपना एक विशेष स्थान एवं महत्व है। बंदिशों का रियाज़ काफी परिणामकारक एवं लाभदायी होता है, ऐसा शोधार्थी का पूर्वअनुभव भी है। उसी तरह, तबले के रियाज़ हेतु विद्वानों द्वारा रचित पारंपारिक बंदिशों का भी विशेष महत्व है तथा तबले के विद्यार्थीयों ने इन पारंपारिक बंदिशोंका स्वागत अपने रियाज़ में करना चाहिए, ऐसा शोधार्थी का मानना है।

पंडित अमरनाथजी रियाज़ के बारे में अपने वक्तव्य में कहते है,– ''रियाज़ का अर्थ है बंदगी। रियाज़ शब्द रियात से बना है। रियाज़ का मतलब है इबादत, बंदगी, भक्ति। इन सभी शब्दों का मतलब भक्ति ही है। रियाज़ जब भक्ति भाव से किया जाता है तो वह इबादत है। लेकिन आज़ रियाज़ का अर्थ सिर्फ गले का, हाथ का व्यायाम बन कर रह गया हैं। फर्क तो इतना ही है कि आप उसे भक्ति भाव से कर रहे है या नहीं। रियाज़ का मतलब है, आप वो सिध्द करें जो आप अभी तक सिध्द नहीं कर सके है। उसके लिए आपको विश्वास के साथ जूझना पड़ेगा।''

उधर, संगीताचार्य डॉ. आनंदजी नायगांवकर अपने साक्षात्कार में कहते है,– ''रियाज़ हा सतत निरंतर चालणाऱ्या नामस्मरणा सारखा आहे, तो आणि तोच तारुन नेऊ शकतो. श्वास घेणे जसे नित्याचे काम आहे; तसाच रियाज़ आहे, कुठली ही संगीत कला आत्मसात करण्यासाठी व त्यात प्राविण्य मिळण्यासाठी तीन गोष्टी आवश्यक आहेत, अभ्यास म्हणजेच संगीतात ऐकणे, मनन व विचार आणि सगळ्यात महत्वाचे म्हणजे रियाझ 'सबसे बड़ा रियाज़' हे म्हंटलेच आहे.''[3]

उपुर्यक्त विवेचन से विद्‌वानों का रियाज़ के प्रति रहनेवाला आध्यमिक दृष्टिकोन भी हमें समझ में आता है। शोधार्थी के कहने का तात्पर्य यह है कि, विद्‌वानों की हर बंदिश में, रचना में उनकी अध्यात्मिक बैठक दिखायी देती है, जिससे उनके व्यक्तित्व का परिचय हमें मिलता है और इसी भावना से विद्‌वानों द्वारा रची गयी पारंपारिक बंदिशों का रियाज़ हेतु अन्यतम महत्व है, ऐसा शोधार्थी का विश्वास है।

रियाज़ हेतु पारंपारिक रचना (बंदिश) का उदाहरण –

उस्ताद हुसेन अली खाँ साहब (फर्रुखाबाद घराना) की एक मुरका गत, जो, 'धीरधीर', 'घिडनग', 'तींगनग', बोलों के रियाज़ हेतु महत्वपूर्ण है।

मुरक्काः बराबर गत तीनताल / एकताल (सौजन्य– संगीताचार्य डॉ. आनंद नायगांवकरजी द्वारा साभार प्राप्त)

$_x$घिडनगधीरधीर घिडनगतींगनग तीटतीटघिडनग धाऽघिडनगधीर।

$_0$धीरधीरघिडनग धीरधीरघिडनग तूंनाकत्ऽऽऽऽ तीरतीरघिडनग।

$_x$धाऽघिडनगधीर धीरधीरघिडनग धीरधीरधीरधीर घिडनगतींगनग।

+ खाली

6.5. तबले के विविध घराने एवं बंदिशे :

तबले के विविध घराने एवं बंदिशो का बड़ा ही परस्परपूरक संबंध है। तबले की अभिजात शास्त्रीय परंपरा से चली आयी अगणित बंदिशों का निर्माण उन घरानों की मूल पहचान बन चुकी है। तबले के विविध रचना प्रकार एवं बंदिशे घरानों की नींव होती है। उदाहरण तौर पर–

धाती टधा तीट धाधा तीट धागे तींना किना .... यह दिल्ली घरानें का मशहूर कायदा, वर्तमान में भी इस घराने की अमीट़ निशानी है। प्रत्येक घरानों के तबलावादक विद्‌वानों ने इस रचना का अपने वादन में भली–भाँति स्वागत किया है। भले ही, विस्तार की सोच–विचार अलग हो, लेकिन यह कायदा दिल्ली के मूल आधारपर यानी धरती पर ही बजता हुआ दिखायी देता है। अलग–अलग घरानों के तबलावादक दिल्ली घराने की वादनशैली एवं निकास से प्रामाणिक रहते हुए इस

कायदें का वादन विचारपूर्ण तरीके से करते है, यहीं इस रचना का सही सन्मान है, ऐसा शोधार्थी का मानना है। इसतरह, हमे दिखायी देता है कि, तबले की बंदिशे एवं घरानों का बड़ा ही निकट एवं पूरक संबंध है। उपर्युक्त, दिल्ली घरानें की विचारपूर्ण रचना यह वादनहेतु प्रभावी है ही, लेकिन उससे भी ज्यादा, उस रचना के रियाज़ का अन्यतम महत्व है। तत्कालीन विद्वानों एवं कलाकारों ने अपनी विचार प्रगल्भता से ऐसी चिरंतन रचनाओं का निर्माण कर, तबलाजगत पें अनंत उपकार किए है, जिसे कभी भी भूलाया नहीं जा सकता।

प्रस्तुत अध्याय में शोधार्थी ने गुरुजनों से तथा तबलाविद्वानों से प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप सें प्राप्त ऐसे ही महत्वपूर्ण बंदिशों के संकलन की चेष्टा की हैं। तबले के विविध घरानों की रियाज़ हेतू की गयी इन आदर्श बोलपंक्तियाँ तथा बंदिशों का संकलन करना, यह शोधार्थी का एक अल्पप्रयास है। तबले के विद्यार्थीयों को इन घरानेदार बंदिशोंका निश्चित रूप से लाभ ही होगा, ऐसा शोधार्थी का विश्वास है। तबले के इस विभिन्न रचना प्रकार एवं बंदिशों के सातत्यपूर्ण रियाज़ से प्रत्येक विद्यार्थी, यह रियाज़ी साधक बन पायेगा और निश्चय ही अपने अंतिम ध्येय तक सफलतापूर्वक पहुँच पायेगा ऐसा शोधार्थी का मानना हैं।

आगे, हम तबले के विविध घरानों की रियाज़ हेतू बंदिशों की, उनकी वादन विशेषता के साथ, विगतवार तथा क्रमबध्दता से विस्तारपूर्वक चर्चा करेंगे।

6.5.1 दिल्ली घराना :

दिल्ली घराना तबले का सबसे प्रथम एवं आद्य घराने के रूप में जाना जाता हैं। दिल्ली घराने में तर्जनी तथा मध्यमा ऊँगलियों का अधिकतर प्रयोग होने से इसे 'दो ऊँगलियों का बाज अथवा चाँटी का बाज' के नाम से भी जाना जाता है। विस्तारक्षम रचनाओं की विपुलता, यह दिल्ली घराने की विशेषता है। दिल्ली घरानों के विद्वानों ने असंख्य रचनाओं की निर्मिती कर के, इस घरानें को साहित्य समृध्द बनाया है। वैसे, देखा जाए तो, दिल्ली की प्रत्येक रचना रियाज़ हेतू महत्त्वपूर्ण है फिर भी विद्वानों ने तबले के रियाज़ के लिए असंख्य आदर्श बोलपंक्तियों की भी रचना की है। उदाहरण तौर पर, 'लड़ी', यह दिल्ली की विशेष रचना निर्मिति है, जो रियाज़ हेतू महत्वपूर्ण हैं। दिल्ली घराने की ऐसी ही कुछ महत्वपूर्ण आदर्श

बोलपंक्तियाँ एवं बंदिशों का संकलन करके प्रस्तुत प्रबंध में उन्हें देना, शोधार्थी ने उचित समझा है, जिससें तबला–विद्यार्थीयों को जरूर लाभ होगा, ऐसा शोधार्थी को विश्वास है।

तबले के रियाज़ हेतु दिल्ली घराने की कुछ आदर्श बोलपंक्तियाँ एवं बंदिशे;

कायदाः तीनताल

मुख : $_{x}$धाधा तीट । $_{2}$धाधा तींना।
$_{0}$ताता तीट । $_{3}$धाधा धींना।

कायदा : तीनताल

मुख : $_{x}$धाती धागे नधा तिरकिट। $_{2}$धाती धागे तींना किना।
$_{0}$ताती ताके नधा तिरकिट । $_{3}$धाती धागे धींना गिना।

लंबछड कायदा : तीनताल

मुख : $_{x}$धाऽत्रक धींनागिना धागेत्रक धींनागिना।
$_{2}$धागेनाधा त्रकधीन धागेत्रक धींनागिना।
$_{0}$धागेतीट धागेत्रक धींनागिना धागेतीट।
$_{3}$धागेनाधा त्रकधीन धागेत्रक तींनाकिना। – खाली

कायदा : तीनताल

मुख : $_{x}$धाऽतिर किटधाऽ तीधा गेना। $_{2}$धाती धागे तींना किना।
$_{0}$ताऽतिर किटधाऽ तीधा गेना। $_{3}$धाती धागे धींना गिना।

कायदा : तीनताल (दीड़ी अंग – देहली शैली)

रचना : उस्ताद अमीर हुसेन खाँ साहब –

मुख :– $_{x}$धागधीं नागिना धाऽतिरकिट तकतिरकिट।
$_{2}$धाऽतिरकिट तकधाऽतीत धागतीं नाकिना।
$_{0}$ताकतीं नाकिना ताऽतिरकिट तकतिरकिट।
$_{3}$ धाऽतिरकिट तकधाऽतीत् धागधीं नागिना।

कायदा : तीनताल

मुख :– $_x$तिरकिटतिरकिट धाऽतिरकिटधाऽ गेनाधागे तींनाकिटधाऽ।
$_2$तिरकिटधाऽतिर किटतिरकिटधाऽ गेनाधागे तींनाकिना।
$_0$तिरकिटतिरकिट ताऽतिरकिटताऽ केनाताके तींनाकिटधाऽ।
$_3$तिरकिटधाऽतिर किटतिरकिटधाऽ गेनाधागे धींनागिना।

कायदा : तीनताल (दीड़ी अंग)

मुख : $_x$धाऽतिरकिट तकतिरकिट। $_2$धातीधा धातींना।
$_0$ताऽतिरकिट तकतिरकिट। $_3$धातीधा धाधींना।

कायदा : तीनताल (बाँया – प्रधान) रचना : पं. सुधीर माईणकरजी

(सौजन्य– तबलावादक श्री. सिध्देशजी कामत, मुंबई द्वारा साभार प्राप्त)

मुख : $_x$धाऽघेना तीटघेना धागधींना तीटघेना।
$_2$धागधींना घेनातीट घेनाधागे तींनाकिना।
$_0$ताऽकेना तीटकेना ताकतींना तीटकेना।
$_3$धागधींना घेनातीट घेनाधागे धींनागिना।[4]

कायदा : तीनाताल (बाँया – प्रधान) रचनाः पं. सुधीर माईणकरजी

मुख : $_x$धागधींना गधागेना धागधींना गिनाकिडनग।
$_2$तिरकिटधाग धींनागधा गेनाधागे तींनाकिना।
$_0$ताकतींना कताकेना ताकतींना किनाकिडनग।
$_3$तिरकिटधाग धींनागधा गेनाधागे धींनागिना।[5]

रेला : तीनताल

मुख : $_x$धाऽतिर किटतक तिरकिट धाऽतिर। $_2$किटतक धाऽतिर किटतक तिरकिट।
$_0$ताऽतिर किटतक तिरकिट धाऽतिर। $_3$किटतक धाऽतिर किटतक तिरकिट।

रेला : तीनताल

$_x$धाऽतिर किटतिर किटतक धाऽतिर। $_2$किटतक धाऽतिर किटतिर किटतक।
$_0$ताऽतिर किटतिर किटतक धाऽतिर। $_3$किटतक धाऽतिर किटतिर किटतक।

रेला : तीनताल

मुख : x धाऽतिरकिटतक धीरधीरधीरधीर किटतकतिरकिट ताऽतिरकिटतक।

2 धाऽतिरकिटतक तिरकिटधाऽतिर किटतकतकतींऽ ताऽतिरकिटतक।

0 ताऽतिरकिटतक तीरतीरतीरतीर किटतकतिरकिट ताऽतिरकिटतक।

3 धाऽतिरकिटतक तिरकिटधाऽतिर किटतकतकधींऽ ताऽतिरकिटतक।

कायदा : तीनताल (तिःस्त्र जाती)

मुख्य : x धागेति रकिट तीटक्ड धेतीट।

2 धागेती टधागे नागेतीं नाकिना।

0 ताकेति रकिट तीटक्ड धेतीट।

3 धागेती टधागे नागेधीं नागिना।

कायदा : तीनताल रचनाः गुरूवर्य पं. अरविंदजी मुलगांवकर

मुख : x तीटघेना धागेनाधि टधागेना तींनाक्ऽधे।

2 तीटघेना धागेनाधि टधागेना तींनाकिना।

0 तीटकेना ताकेनाति टताकेना तींनाक्ऽधे।

3 तीटघेना धागेनाधि टधागेना धींनागिना।

कायदा : तीनताल रचनाः गुरुवर्य पं. आमोदजी दंडगे

मुख : x धाती धाऽकिट तकधाऽ तीधा।

2 किटतक धागे तींना किना।

0 ताती ताऽकिट तकधाऽ तीधा।

3 किटतक धागे धींना गिना।

लडी : तीनताल

x धाऽतीट घिडतीट घिडनग धाऽतीट। 2 घिडनग धाऽतीट घिडतीट घिडनग।

0 ताऽतीट किटतीट किडनग धाऽतीट। 3 घिडनग धाऽतीट घिडतीट घिडनग।

लड़ी : एकताल (रचनाः उस्ताद शलारी खाँ साहब)

x धाऽतीटघिडतीट घिडनगधाऽतीट। 0 घिडनगधाऽतीट घिडतीटघिडनग।

2 धाऽतीटघिडतीट घिडतीटघिडनग। 0 धाऽतीटघिडतीट घिडतीटघिडनग।

3 धाऽतीटघिडतीट घिडनगधाऽतीट। 4 घिडनगधाऽतीट घिडतीटघिडनग।[6] – खाली

लडीः तीनताल

(रचनाः लयभास्कर खाप्रूमामा पर्वतकर)

$_{x}$ना ना ती ट घे गे ती ट। $_{2}$कत् ऽ ती ट घे गे ती ट।

$_{0}$थूँ ऽ ती ट घे गे ती ट। $_{3}$धा ऽ ती ट धा ऽ ती ट।[7]

लड़ी : तीनताल

(रचनाः उस्ताद नत्थूँ खाँसाहब)

$_{x}$घिडनग तीटघिड़ नगतीट घिडनग। $_{2}$नगतीट घिडनग तीटघिड नगतीट।

$_{0}$किडनग तीटकिड नगतीट किडनग। $_{3}$नगतीट घिडनग तीटघिड नगतीट।[8]

तीनतालः बोलपंक्ति (सौजन्य–ज्येष्ठ तबलावादक श्री. महेश पाटीलजीसे साभार प्राप्त)

$_{x}$घिडनग तीटतीट घिडनग तींना। $_{2}$तीटघिड नगतीट घिडनग तींना।

$_{0}$किडनग तीटतीट किडनग तींना। $_{3}$तीटघिड नगतीट घिडनग धींना।[9]

लड़ी : तीनताल (रचनाः उस्ताद शलारी खाँसाहब)

$_{x}$धाऽतीट घिडतीट घिडनग धाऽतीट। $_{2}$घिडतीट घिडनग धाऽतीट घिडनग।

$_{0}$ताऽतीट किडतीट किडनग धाऽतीट। $_{3}$घिडतीट घिडनग धाऽतीट घिडनग।

$_{x}$धाऽतीट घिडनग धिनतक धाऽतीट । $_{2}$घिडनग धाऽतीट घिडनग धिनतक।

$_{0}$ताऽतीट किडनग तिनतक धाऽतीट। $_{3}$घिडनग धाऽतीट घिडनग धिनतक।[10]

लंबछड कायदाः तीनताल

मुख : $_{x}$धीटधागे धींनागिना धीटधागे धींनागिना।

$_{2}$धीटधीट धातीटधा गेनाधागे धींनागिना।

$_{0}$धातीटधा गेनाधागे धींनागिना धीटधीट।

$_{3}$धीटधीट धातीटधा गेनाधागे तींनाकिना। + खाली

कायदा : तीनताल

मुखः– $_{x}$धागेतीट क्धेतीट धागेनागे तींनाकिना

$_{0}$ताकेतीट क्धेतीट धागेनागे धींनागिना

कायदा : तीनताल

मुखः –	x धीनातीट	घीनाधागे	धींनागिना	तीटघीना।
	2 धाऽतिरकिधा	गेनातीट	घीनाधाग	तींनाकिना।
	0 किनातीट	किनाताके	तींनाकिना	तीटघीना।
	3 धाऽतिरकिटधा	गेनातीट	घीनाधाग	धींनागिना।

बल तथा पेंच : कायदा : तीनताल

बलः–	x धातीटधा	तीटधाधा	तीटधागे	धींनागिना	
	2 तीटधागे	तीटधाधा	तीटधागे	तींनाकिना	– और खाली
पेंच :	x धातीटधा	तीटधाधा	तीटधागे	धीनागधा	
	2 तीटधागे	तीटधाधा	तीटधागे	तींनाकिना[11]	–और खाली

तीनताल : कायदा (दिल्ली शैली)

रचना : गुरूवर्य पं. अरविंद मुळगांवकर

x धाधातीट	धातीटक	तधागेना	तींनाधाधा।
2 तीटतीट	धातीटक	तधागेना	तींनाकिना।
0 ताताताीट	तातीटक	तताकेना	तींनाधाधा।
3 तीटतीट	धातीटक	तधागेना	धींनागिना।

6.5.2. अजराड़ा घराना :

अजराड़ा घराना दिल्ली का शागीर्द घराना है। दिल्ली की तरह अजराड़ा ने भी बंद बाज का स्वीकार किया। वादन पध्दति में अनामिका के प्रयोग–कारण अजराड़ा की रचनाएँ दिल्ली की तुलनामें गतिमान बनी। तिस्त्र जाति की रचना निर्मिति, यह भी अजराड़ा की एक औंर विशेषता है। अजराड़ा घराने के विद्वानों ने भी तबले को साहित्य समृध्द बनाकर रियाज़ व प्रस्तुतिकरण, दोनों के लिए महत्त्वपूर्ण रचना ओं की निर्मिति की। विस्तारक्षम रचनाओं मे कायदे की खाली अलग बोलों से कर के, इन रचनाओं को और भी सौंदर्यपूर्ण बनाकर अपनी एक अलग पहचान अजराड़ाने बनायी। विस्तारक्षम रचनाओं की विपुलता, यह अजराड़े की विशेषतः है। अजराड़ा घराने में रियाज़ हेतु 'इकवाई वादन' का विशेष महत्व है।

तबले के रियाज़ हेतु अजराड़ा घराने की कुछ आदर्श बोलपंक्तियाँ एवं बंदिशे;

पेशकार – कायदाः तीनताल

(रचनाः उस्ताद हबीबुद्दीन खाँसाहब)

मुखः $_{x}$धाऽक्धा तीधागेना धागेधींना धागेधींना।

$_{2}$गिनाधाऽतिर किटधातीधा गेनाधागे तींनाकिना।

$_{0}$ताऽक्ता तीताकेना ताकेतींना ताकेतींना।

$_{3}$किनाधाऽतिर किटधातीधा गेनाधागे धींनागिना।

कायदा : तीनताल (तिःस्त्र जाती)

मुख : $_{x}$धींऽऽधागेना धाऽऽधागेना धाऽऽघेतक धीनधींनागिना।

$_{2}$धागेतिरकिट धींऽऽधागेना धाऽऽघेतक तीनतींनाकिना।

$_{0}$तींऽऽताकेना ताऽऽताकेना ताऽऽकेतक तींनतींनाकिना।

$_{3}$धागेतिरकिट धींऽऽधागेना धाऽऽघेतक धींनधींनागिना।[12]

कायदा : तीनताल (तिःस्त्र जाती)

मुख :– $_{x}$धातीत् धागेना धींनाक् धातिरकिट।

$_{2}$धातीत् धागेना धागेतीं नाकिना।

$_{0}$तातीत् ताकेना तींनाक्ऽ धाऽतिरकिट।

$_{3}$धातीत् धागेना धागेधीं नागिना।[13]

कायदा : तीनताल (मुरक्का)

(रचनाः उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब)

$_{x}$घेनानागेधीनधागे नागेधीनधागेत्रक धागेनाधात्रकधीन धागेत्रकधींनागिना।

$_{2}$धागेनागेधीनधागे नागेधीनधागेत्रक धागेनाधात्रकधीन धागेत्रकतींनाकिना।

$_{0}$केनानाकेतीनताके नाकेतीनताकेत्रक ताकेनातात्रकतीन ताकेत्रकतींनाकिना।

$_{3}$धागेनागेधीनधागे नागेधीनधागेत्रक धागेनाधात्रकधीन धागेत्रकधींनागिना।

रेला : तीनताल (दो ऊँगलियों का 'धिरधिर')

मुख :– $_{x}$धाऽघिडनगधीर धीरकिटधाऽघिड नगधीरधीरकिट नगधीरधीरकिट।

$_{2}$नगधीरधीरकिट धाऽघिडनगधीर धीरकिटधाऽघिड नगतीरतीरकिट।

$_{0}$ताऽकिडनगतीर तीरकिटताऽकिड नगतीरतीरकिट नगतीरतीरकिट।

$_{3}$नगधीरधीरकिट धाऽघिडनगधीर धीरकिटधाऽघिड नगधीरधीरकिट।[14]

कायदा : तीनताल (रचना : उस्ताद अक्रम खान साहब)

मुख :– $_{x}$धात्र कधी टधा गेना। $_{2}$धाती धागे तींना किना।

$_{0}$तात्र कधी टधा गेना। $_{3}$धाती धागे धींना गिना।

कायदा : तीनताल (तिःस्त्र जाती)

मुख :– $_{x}$धात्रक धिकीट घेनाधा तीगेना। $_{2}$धात्रक धिकीट गिनतीं नाकिना।

$_{0}$तात्रक तिकिट केनाता तीकेना। $_{3}$धात्रक धिकीट गिनधीं नागिना।

अजराड़ा घराने के वादक रियाज़ की आदर्श बोलपंक्तियों को 'इकवाई' के नाम से संबोधते हैं। ऐसे ही एक इकवाई का उदाहरण;

सौजन्य– तबलावादक श्री. नंदकिशोरजी दाते, बड़ोदा से साभार प्राप्त

धातीगिन तकधीन नानागिन धातीगिन तकधीन नानागिन तकधीन नानागिन

धातीगिन तकधीन नानागिन तकधीन नानागिन धातीगिन तकधीन नानागिन

ततीकिन तकतीन नानाकिन तातीकिन तकतीन नानाकिन तकतीन नानाकिन

धातीगिन तकधीन नानागिन तकधीन नानागिन धातीगिन तकधीन नानागिन[15]

कायदा : तिस्त्र जाती – तीनताल

मुख : $_{x}$धाऽधाऽधाऽ धाऽघेगेनक धीनघेगेनक धीनधींनागिना

$_{2}$तकधीनगिन तकीटधाऽड धीनघेगेनक तीनतींनाकिना

$_{0}$ताऽताऽताऽ ताऽकेकेनक तीनकेकेनक तीनतींनाकिना

$_{3}$तकधीनगिन तकीटधाऽड धीनघेगेनक धींनधींनागिना

कायदा : चतुस्त्र जाती – तीनताल

मुख : $_x$धाऽधाऽघिडनग धीनधागेत्रकधीन घिडनगधीनगिन धागेत्रकधींनागिना

$_2$धागेत्रकधीनाघिड नगधीनधागेत्रक धीनघिडनगधीन धागेत्रकतींनाकिना

और खाली

(उपर्युक्त, दोनों कायदें शोधार्थी को मार्गदर्शक गुरु डॉ. अजयजी अष्टपुत्रे, द्वारा प्राप्त हुए है।)

तीनताल– मिश्रजाती कायदा (रचनाः उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहेब)

मुखः $_x$धागेनाधागधीन धागेनाधीटधीट धागेनाधागधीन धागेनातीनाकिना

$_0$ताकेनाताकेतिन ताकेनातीटतीट धागेनाधागधीन धागेनाधीनागीना

तिस्त्र जाती कायदा– तीनताल

(रचनाः उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहेब) – मार्गदर्शक गुरू डॉ. अजय अष्टपुत्रे इन से साभार प्राप्त – तिरकिटतकधीरधीर बोल के रियाज़ हेतु

मुखः $_x$धातीधा धातींना घिडनगतीं नाघिडनग

$_2$तिरकिटतक धीरधीरकिट धातीधा धातींना

और खाली

मुख : $_x$धाऽतिरकिट धाऽघिडनग तिरकिटतक धीरधीरकिट

$_2$धाऽतिरकिट धाऽघिडनग तिरकिटतक तींगतींनाकिना

और खाली

मार्गदर्शक गुरू डॉ. अजय अष्टपुत्रे इन से 'धीरधीर' बोल के रियाज़ हेतु एक उपयुक्त रचना–

तीनताल – रेला (लंबछड़ रचना)

मुख : $_x$धाऽतिरकिटतक धीरधीरकिटतक धीरधीरधीरधीर धीरधीरकिटतक

$_2$धाऽतिरकिटतक धीरधीरकिटतक धाऽतिरकिटतक तींनाकिटतक

$_0$तिरकिटतकधीर धीरधीरकिटतक धीरधीरधीरधीर धीरधीरकिटतक

$_3$धाऽतिरकिटतक धीरधीरकिटतक धाऽतिरकिटतक तींनाकिटतक

और खाली

तिरकिटधीरधीर' बोल के रियाज़ हेतु—

तीनताल रेला—

मुख : $_x$धाऽतिरकिटधीर धीरधीरकिटतक धाऽतिरकिटतक तींनाकिटतक

और खाली

मुख : $_x$धाऽतिरकिटतक तिरकिटधीरधीर धीरधीरकिटतक ताऽतिरकिटतक

और खाली

6.5.3. लखनौ घराना :

खुले बाज का आद्य घराने के रूप में लखनौ घराना जाना जाता हैं। तबले की 'लव' पर खुले आघात से वादन किया जाता है। लखनौ घरानें पर कथ्यक नृत्य का प्रभाव होने के कारण पखावज़ की पूर्वसंकल्पित रचनाओं का अधिकतर वादन होता हुआ दिखायी देता है। गततोडे, परन, आमद, चक्रदार, आदि रचनाओं का वादन में महत्त्व होता है।

तबले के रियाज़ हेतु लखनौ घराने की कुछ आदर्श बोलपंक्तियाँ एवं बंदिशे;

रेलाः तीनताल

मुखः $_x$तकतीट घिडनग दिनतक तकतीट। $_2$घिडनग तकतीट घिडनग दिनतक।
$_0$तकतीट किडनग तिनतक तकतीट। $_3$घिडनग तकतीट घिडनग दिनतक।

रेला : तीनताल

मुख : $_x$तकदिन तकतक दिनतक दिनतक। $_2$तीटतीट घेगेतीट घिडनग दिनतक।
$_0$तकतिन तकतक तिनतक तिनतक। $_3$तीटतीट घेगेतीट घिडनग दिनतक।

रेलाः तीनताल

(रचना : गुरूवर्य पं. अरविंद मुलगांवकरजी)

मुख : $_x$धाऽऽऽघिडनग धीरधीरघिडनग धीरधीरधीरधीर घिडनगदिनतक।
$_2$धीरधीरघिडनग दिनतकधीरघिड नगधीरधीरधीर घिडनगदिनतक।
$_0$ताऽऽऽकिडनग तीरतीरकिडनग तीरतीरतीरतीर किडनगतिनतक।
$_3$धीरधीरघिडनग दिनतकधीरघिड नगधीरधीरधीर घिडनगदिनतक।

रेला : तीनताल (रचनाः गुरूवर्य पं. आमोदजी दंडगे)

मुख : xधाऽघिडनगधीर घिडनगधीरधीर घिडनगतींनाकिड नगधीरधीर।

2धीरघिडनगधीर धीरधीरधीरघिड नगधाऽघिडनग तींनाकिडनग।

0ताऽकिडनगतीर किडनगतीरतीर किडनगतींना किडनगधीरधीर।

3धीरघिडनगधीर धीरधीरधीरघिड नगधाऽघिडनग धींनाघिडनग।

गत : तीनताल

(रचनाः उस्ताद वाजीद हुसेन खाँसाहब)

xधाऽघिडनगतेत् ऽऽधाऽघिडनग तेत्ऽऽघिडनग तींनाकिडनग

2तेत्ऽऽघिडनग तींगनगतेत्ऽऽ तेत्ऽऽघिडनग तींनाकिडनग

0तेत्तेत्ऽऽताऽ घिडनगतेत्ऽऽ ताऽकेतिरकिटतक ताऽकेतिरकिटतक

3तकतीटघिडनग दिनतकतकतीट घिडनगतकतीट घिडनगदिनतक

– खाली

गत : तीनताल रचनाः मियाँ बक्शुजी

दिनतक दिनतक तकधिन नागेतीट

घिडनग दिनतक तीटकता किडनग

धीनगिन धागेत्रक तीनकिन नागेतीट

घिडाऽन् नगधेत् ऽधीरधीर कत्ऽऽ

खलिफा उस्ताद आबिद हुसैन खाँसाहब :– (तीनताल)

धेत्धेत्धीटतीट कऽधातीटधागेतीट कऽधातीटधागेतीट धागेनधागेदिगन

नागेतीटकताकता धेतिरकिटतकतागेतीट केतिरकिटकतागेतीट तकिटधिकिटधागे

तीटकतागदीगन धिन्नधिंऽनधिंऽ धिंऽधिंऽधिटधिट घेगेतीटगदीगन

धागेतीटतागेतीट धागेतीटतागेतीट धेत्तगेऽन्नधेत् तागेऽनधेत्धेत्

धेत्तगेऽन्नधाऽ त्रकधेत्तगेऽन्न धाऽऽऽ ऽऽकत धागेतीटतागेतीट

धागेतीटतागेतीट धेत्तगेऽन्नधित् तगेऽन्नधेत्धेत् धेत्तगेऽन्नधाऽ

त्रकधेत्तगेऽन्न धाऽऽऽऽऽकत धागेतीटतागेतीट धागेतीटतागेतीट

धेत्तगेऽन्नधेत् तगेऽन्नधेत्धेत् धेत्तगेऽन्नधाऽ त्रकधेत्तगेऽन्न xधा

(उपर्युक्त रचनाः आचार्य श्रीगिरीश्चंद्रजी श्रीवास्तव जी से संगीतकला विहार अंक, सितंबर 2018 से साभार प्राप्त हुई है।)

6.5.4. फर्रूखाबाद घराना :

लखनौ के शागीर्द घराने के रूप में फर्रूखाबाद ने खुलें बाज का स्वीकार करते हुए वादनशैली की एक नयी पहचान बनायी। फर्रूखाबाद घरानें की यह विशेषता थी की, इस घरानें के तबलावादक उच्चतम कोट़ी के कलाकार थे ही, परंतु वे एक उत्तम रचनाकार भी थे। फलस्वरूप, फर्रूखाबाद घराना साहित्य की दृष्टि से सर्वगुणसंपन्न घरानें के रूप में लोकप्रिय हुआ। फर्रूखाबाद घराने ने सभी घरानों के वादनशैली का स्वागत करते हुए अपनी एक विशेष पहचान बनाली, इसलिए फर्रूखाबाद घरानें को सभी घरानों का 'सुवर्णमध्य' कहना उचित होगा, ऐसा शोधार्थी का मानना है। तबले की सभी रचना प्रकारों की विपुलता, यह इस घराने की विशेषता है। तबले के रियाज़ की 'चिल्ला पध्दति' तथा रियाज़ हेतु 'मुरक्का' वादन, यें तबलाजगत को मिली फर्रूखाबाद की ही देन हैं।

तबले के रियाज़ हेतु फर्रूखाबाद घराने की कुछ आदर्श बोलपंक्तियाँ एवं बंदिशे;

सीधी गतः तीनताल (बराबर लय) – मुरक्का गत

(रचना : उस्ताद हाजी विलायत अली खाँसाहब)

xधीरधीरकिटधाऽ	तिरकिटधींना	किटधाऽकिटधाऽ	तिरकिटधींना।
2किटधाऽतिरकिट	धींनाकिटतक	तीरतीरतीरधीर	धीरधीरधीरधीर।
0तीरतीरकिटताऽ	तिरकिटतींना	किटताऽकिटताऽ	तिरकिटतींना।
3किटधाऽतिरकिट	धींनाकिटतक	तीरतीरतीरधीर	धीरधीरधीरधीर।

उपरोक्त गत का जबाबः– रचना गुरुवर्य पं. अरविंदजी मुळगांवकर

(पं. मुळगांवकर गुरुजी के 'अपनी धुन' इस ग्रंथ से साभार प्राप्त)

धीरधीरकिटधाऽ	तिरकिटधीना	ऽऽऽऽतिरकिटधाऽ	तिरकिटधीना
तिरकिटतकधीर	धीरधीरधीरधीर	धीरधीरकिटधाऽ	तिरकिटधीना
			और खाली

तीनताल : (रचनाः उस्ताद अमीर हुसेनखाँ साहब)

x धात्रकधिकीट	कतगदीगन	धात्रकधिकीट	कतगदीगन।
2 तकीटधात्रक	धिकीटतकीट	धात्रकधिकीट	कतगदीनग।
0 तात्रकतिकीट	कतकतीकन	तात्रकतिकीट	कतकतीकन।
3 तकीटधात्रक	धिकीटतकीट	धात्रकधिकीट	कतगदीगन।

रेला : तीनताल– दो ऊँगलियोंका 'धीरधीर' (तिस्त्रजाती)

(रचना : उस्ताद अमीर हुसेन खाँ साहब)

मुख :

x धाऽतिरकिट	तकधीरधीर	धीरधीरकिट	तकतिरकिट।
2 धाऽतिरकिट	तकतिरकिट	धीनगिननग	तकतीनकिन।
0 ताऽतिरकिट	तकतीरतीर	तीरतीरकिट	तकतिरकिट।
3 धाऽतिरकिट	तकतिरकिट	धीनगिननग	तकधीनगिन।

रेला : तीनताल :

(रचनाः उस्ताद अमीर हुसेन खाँसाहब)

मुखः

x धाऽतिरकिट	तकतिरकिट	धातीग	दीगन।
2 धातीगि	नधाती	धातीक	तीकन।
0 ताऽतिरकिट	तकतिरकिट	तातीक	तीकन।
3 धातीगि	नधाती	धातीग	दीगन।

रेला : तीनताल (रचनाः उस्ताद अमीर हुसेन खाँसाहब)

मुखः

x धातीगिनधीन	गिनतकतक	धीनगिनतक	तकधीनगिन।
2 धातीगिनधीन	गिनतकतक	धीनगिनतक	तींननानाकिन।
0 तातीकिनतीन	किनतकतक	तीनकिनतक	तकतीनकिन।
3 धातीगिनधीन	गिनतकतक	धीनगिनतक	धींननानागिन।

कायदा : तीनताल (तिःस्त्र जाती)

(रचनाः उस्ताद अमीर हुसेन खाँसाहब)

मुख :

xधाऽघिडनतिरकिट धाऽतिरकिटतकतिरकिट धाऽतिरकिटतकधाती धागधींनागिना।

2धागधींनागिन तींनाकिडनगतिरकिट धाऽतिरकिटतकधाती धागतींनाकिना।

0ताऽकिडनगतिरकिट ताऽतिरकिटतकतिरकिट ताऽतिरकिटतकताती ताकतींनाकिना।

3धागधींनागिन तींनाकिडनगतिरकिट धाऽतिरकिटतकधाती धागधीनागिना।

उपर्युक्त कायदे का जवाबः

कायदाः तीनताल (तिःस्त्र जाती)

(रचनाः गुरूवर्य पं. अरविंद मुलगांवकरजी)

मुखः

xधाऽतिरकिटतकतिरकिट तिरकिटतकतकतिरकिट

धाऽतिरकिटतकधाती धागधींनागिना।

2धाऽतिरकिटतकधाती धागेतींनाघिडनग

तिरकिटतकतकधाती धागधींनागिना।

0ताऽतिरकिटतकतिरकिट तिरकिटतकतकतिरकिट

ताऽतिरकिटतकताती ताकतींनाकिना।

3धाऽतिरकिटतकधाती धागेतींनाघिडनग

तिरकिटतकतकधाती धागधींनागिना।[16]

कायदाः तीनताल (रचनाः गुरूवर्य पं. अरविंद मुलगांवकर) : सुर का कायदा

मुखः xघिनधाऽ ऽऽघिन धगेनधा ऽनघिन

2तींनाकिना धगेनतीं नाकधीन तींनाकिना

0धगेनधा ऽनधगे नधाऽन धाऽघिन

3तींनाकिन धगेनतीं नाकधीन तींनाकिना + खाली

बोलपंक्तिः तीनताल

x धीरधीरकिटतक तिरकिटधा ऽऽऽ धीरधीरकिटतक तिरकिटधाऽऽऽ।

2 धीरधीरकिटतक तिरकिटधा ऽतिर किटतकतिरकिट धाऽतिरकिटतक।

0 तीरतीरकिटतक तिरकिटता ऽऽऽ तीरतीरकिटतक तिरकिटताऽऽऽ।

3 धीरधीरकिटतक तिरकिटधा ऽतिर किटतकतिरकिट धाऽतिरकिटतक ।

बोलपंक्तिः तीनताल :

x धीरधीरकिटतक तकीटधा ऽऽऽ धीरधीरकिटतक तकिटधाऽऽऽ।

2 धीरधीरकिटतक तकीटधाऽतिर किटतकतकीट धाऽतिरकिटतक।

0 तीरतीरकिटतक तकीटता ऽऽऽ तीरतीरकिटतक तकीटताऽऽऽ।

3 धीरधीरकिटतक तकीटधाऽतिर किटतकतकीट धाऽतिरकिटतक।[17]

मुरक्का : तीनताल (रचनाः गुरूवर्य पं. अमोदजी दंडगे)

x धीनगिनधीनगिन तकधींननानागिन धातीगिनधीनधाती गिनधीननानागिन।

2 धीनगिनतकधीन गिनधीननानागिन तकतकधीनगिन तकतींननानाकिन।

0 तीनकिनतीनकिन तकतींननानाकिन तातीकिनतीनताती किनतीननानाकिन।

3 धीनगिनतकधीन गिनधीननानागिन तकतकधीनगिन तकधींननानागिन।[18]

छंद– चलन– रेलाः तीनताल (रचनाः उ. हाजी विलायतअली खाँसाहब)

छंद : x धाऽ धाऽ घेना तीधा ऽघे नाती धाग तीन

0 ताऽ ताऽ केना तीधा ऽघे नाती धाग धीन

चलन :

x धातीगिनधातीगिन तीनधातीगिनधाती

2 गिनतीनधातीगिन धातीगिनतीनकिन – खाली

रेला : x धाऽतिरकिटतकधाऽतिरकिटतक दिनतकधाऽतिरकिटतकधाऽतिर

2 किटतकदिनतकधाऽतिरकिटतक धाऽतिरकिटतकतींऽतिरकिटतक – खाली

तीनताल : रेला (रचनाः उस्ताद अमीर हुसेन खाँसाहब)

मुखः– x धागेतिर किटघेगे तिरकिट धीनगिन।

2 धागेतिर किटघेगे नानागिन तीनकिन।

0 ताकेतिर किटकेके तिरकिट तीनकिंन।

3 धागेतिर किटघेगे नानागिन धीनगिन।

उपर्युक्त रचना के लिए शोधार्थी के गुरू पं. अरविंदजी मुलगांवकर रचित एक मुरक्का पलटा –

xधागेतिरकिटघेगे तिरकिटधीनगिन धीनगिनधागेतिर किटघेगेतिरकिट।
2घेगेतिरकिटधीन गिननागेतिरकिट धागेतिरकिटघेगे नानागिनतीनकिन।
0ताकेतिरकिटकेके तिरकिटतीनकिन तीनकिनताकेतिर किटकेकेतिरकिट।
3घेगेतिरकिटधीन गिननागेतिरकिट धागेतिरकिटघेगे नानागिनधीनगिन।

तीनताल : रेला (रचनाः गुरूवर्य पं. अरविंद मुलगांवकर)

'तिरकिट तिरकिट', बोल के रियाज़ हेतु,

मुख : xतिरकिटतिरकिट धाऽधाऽतिरकिट धाऽतिरकिटतिर किटधाऽतिरकिट।
2तकधाऽतिरकिट धाऽतिरकिटतिर किटधाऽतिरकिट तींऽनाऽकिडनग।
0तिरकिटतिरकिट ताऽताऽतिरकिट ताऽतिरकिटतिर किटताऽतिरकिट।
3तकधाऽतिरकिट धाऽतिरकिटतिर किटधाऽतिरकिर धींऽनाऽघिडनग।

तीनताल : कायदा (रचनाः गुरूवर्य पं. अरविंद मुलगांवकर)

मुखः xतकधींऽ ऽऽधागे तिरकिट तकधींऽ तिरकिट तकधींऽ तकधींऽ नानागिन।
2ताकेतिर किटतक धीननाना गिनताके तिरकिट तकधींऽ तकधींऽ नानागिन।
0तकतींऽ ऽऽताके तिरकिट तकतींऽ तिरकिट तकतींऽ तकतींऽ नानाकिन।
3ताकेतिर किटतक धीननाना गिनताके तिरकिट तकधींऽ तकधींऽ नानागिन।

कायदा : तीनताल

मुख : xधा ऽकिट तकतिर किटधा गेना धाती धागे तींना किना।
2धाग तींना किडनग तिरकिट धाती धागे तींना किना।
0ताऽकिट तकतिर किटता केना ताती ताके तींना किना।
3धाग तींना किडनग तिरकिट धाती धागे धींना गिना।[19]

रेला : तीनताल

रचनाः संगीताचार्य डॉ. आनंद नायगांवकर 'घिडनग, तिरकिट', इन बोलो के लिए,

xधाऽऽऽतिरकिट तिरकिटधाऽघिड नगतिरकिटतिर किटताकेतिरकिट।
2धाऽघिडनगतिर किटतिरकिटधाऽ घिडनगतिरकिट तकताकेतिरकिट।
0ताऽऽऽतिरकिट तिरकिटताऽकिड नगतिरकिटतिर किटताकेतिरकिट।
3धाऽघिडनगतिर किटतिरकिटधाऽ घिडनगतिरकिट तकताकेतिरकिट।

कायदाः झपताल

रचनाः संगीताचार्य डॉ. आनंद नायगांवकर

तकीटधिकीट, बोल के लिए,

xधागेतकि टधिकीट तकीटधि कीटधागे तींनाकिडनग

0तिरकिटधाऽधिड़ नगतिरकिटतक तकीटधि कीटधागे तींनाकिना

xताकेतकि टतिकीट तकिटति कीटताके तींनाकिडनग

0तिरकिटधाऽधिड़ नगतिरकिटतक तकीटधि कीटधागे धींनागिना

उस्ताद हुसेन अली खाँ साहब की मुरक्कागत, जो 'धीरधीर',

'घिडनग', 'तींगनग', बोलों के रियाज़ हेतु महत्वपूर्ण हैं।

मुरक्काः बराबर गत तीनताल / एकताल

(सौजन्य– संगीताचार्य डॉ. आनंद नायगांवकरजी, मुंबई इनसे साभार प्राप्त)

xघिडनगधीरधीर घिडनगतींगनग तीटतीटघिडनग धाऽघिडनगधीर

0धीरधीरघिडनग धीरधीरघिडनग तूंनाकत्ऽऽऽऽ तीरतीरघिडनग

xधाऽघिडनगधीर धीरधीरघिडनग धीरधीरधीरधीर घिडनगतींगनग खाली

गतः तीनताल

रचनाः उस्ताद हाजी विलायतअलीखाँ साहब

'धीरधीरघिटतग', 'घिटतकधिनतग्', बोलों के रियाज़ हेतु–

xकताऽघि नाऽधीरधीर कतधीरधीर कत्धीरधीर

0घिटनगधिनतग् धीरधीरघिटतग घिनतगधीरधीर घिटतगधिनतग्

xधींनाधाऽक्ऽधा घिटतगधिनतग धाऽतिरकिटधाऽ घिटतगधिनतग्

0धीरधीरघिटतग घिनतगधीरधीर घिटतगधीरधीर घिटतगधिनतग् खाली

बोलपंक्तिः (ज्येष्ठ तबलावादक श्री. महेश पाटील द्वारा साभार प्राप्त) – तीनताल

xधागेधागे धींनागिना धागेधागे धींनागिना

2धागेधींना गिनाधागे धींनागिना तींनाकिना

0ताकेताके तींनाकिना ताकेताके तींनाकिना

3धागेधींना गिनाधागे धींनागिना धींनागिना

बोलपंक्तिः तीनताल (रचनाः उस्ताद शमशुद्दीन खाँसाहब)

(ज्येष्ठ तबलावादक पं. ओंकारजी गुलवाडी द्वारा साभार प्राप्त)

x धींऽ धींना गिना धींऽ धींना गिना धींना गिना

0 धींऽ धींऽ धीना गिना धींना गिना तींना किना – खाली

तीनतालः रेला (फर्रूखाबाद)

x घेगेतीटघेगेतीट गिनधीननानागिन धागेतीटघेगेतीट गिनधीननानागिन।

2 धीनधींनागिनधागे तिरकिटधीननाना घेगेतिरकिटधीन नानागिननागेतीट।

0 केकेतीटकेकेतीट किनतीननानाकिन ताकेतीटकेकेतीट किनतीननानाकिन।

3 धीनधींनागिनधागे तिरकिटधीननाना घेगेतिरकिटधीन नानागिननागेतीट।

तीनताल : रेला

रचनाः उस्ताद हाजी विलायतअली खाँसाहब

x धाऽतिरकिटतक धाऽतिरकिटतक दिनतकधाऽतिर किटतकधाऽतिर।

2 किटतकदिनतक धाऽतिरकिटतक धाऽतिरकिटतक तींऽतिरकिटतक।

0 ताऽतिरकिटतक ताऽतिरकिटतक तिनतकताऽतिर किटतकधाऽतिर।

3 किटतकदिनतक धाऽतिरकिटतक धाऽतिरकिटतक धींऽतिरकिटतक।

तीनताल : रेला

रचनाः गुरूवर्य पं. अरविंद मुळगांवकर

'तिरकिटतक', 'धीरधीर', इन बोलों के रियाज़ हेतु,

तिरकिटतकतिर किटतकधीरधीर धीरधीरकिटतक ताऽतिरकिटतक।

धीरधीरधीरधीर धीरधीरकिटतक धीरधीरकिटतक ताऽतिरकिटतक।

तिरकिटतकतिर किटतकतीरतीर तीरतीरकिटतक ताऽतिरकिटतक।

धीरधीरधीरधीर धीरधीरकिटतक धीरधीरकिटतक ताऽतिरकिटतक।

आडाचारताल/ रूपकः रेला 'तिरकिट', 'धीरधीर', 'किटतक', 'बोलो के रियाज़ हेतु,

रचनाः उस्ताद अमीर हुसेन खाँसाहब (मिश्रजाती–तीनताल)

धाऽतिरकिटतक तिरकिटधाऽऽऽ ऽऽऽऽधीरधीर

किटतकधाऽतिर किटतकतिरकिट धाऽतिरकिटतक तींऽतिरकिटतक

ताऽतिरकिटतक तिरकिटधाऽऽऽ ऽऽऽऽधीरधीर

किटतकधाऽतिर किटतकतिरकिट धाऽतिरकिटतक धींऽतिरकिटतक

6.5.5. बनारस घराना :

तबले के घरानों में पूर्णतः स्वतंत्र, ऐसे बनारस घराने ने खुलेबाज को अपनाया और अपनी वादनशैली विकसित की। बनारस पर लखनौ का प्रभाव भी था। बनारस घराने के संस्थापक पं. राम सहाय थे, साथ ही इस घराने में हिंदू तबला वादको की संख्या अधिकत्तम है, इसलिए हिंदू तबला वादकों का एकमात्र घराने के रूप में भी बनारस घराना विख्यात हुआ। बनारस घराने के तबलावादक रियाजी एवं मेहनती वादकों का घराना, के रूप में सर्व मान्य हैं। बनारस घरानें के तबलावादकों का रियाज़, वर्तमान में सभी वादक–कलाकारों के लिए एक आदर्श बन चुका है, जो इस घरानें की विशेषता है। बनारस ने अपने स्वतंत्र विचार एवं वादनशैली से अपना एक अलगही अस्तित्व तबला जगत में निर्माण किया हैं। बनारस घराने में तबले के रियाज हेतु 'आदर्श बोलपंक्तियों के वादन' का विशेष स्थान है। बनारस घराने के वादन में लवप्रधानता तथा शाईप्रधानता होती है।

तबले के रियाज़ हेतु बनारस घराने की कुछ आदर्श बोलपंक्तियाँ एवं बंदिशे;

बनारसी बाँट 'धीक धींना तिरकिट धींना' के पहले का मूल कायदाः–

रचनाः पं. रामसहाय

कायदाः तीनताल

मुख x धीन धींना तिरकिट धींना। गिना धींन धीना गिना।

0 तीन तींना तिरकिट तींना। गिना धींन धींना गिना।

उपर्युक्त कायदे की रचनापर आधरित बनारस घराने की प्रसिध्द 'बाँट;

तीनताल x धींक धींना तिरकिट धींना। धागे नधी कधी ताड़ा।

0 तीक तींना तिरकिट तींना। धागे नधी कधी ताड़ा।

कायदा : तीनताल

मुख x धागेतीट धागेतीट धागेनागे तूंनाकता

0 ताकेतीट ताकेतीट धागेनागे धींनाकता

तीनताल : फरद गत (रचनाः पं. भैरव सहायजी)

$_x$धाऽघिडनगतिर   किटतकधाऽघिड   नगतिरकिटतक   धीरधीरकिटतक।

$_2$धीरधीरकिटतक   धीरधीरकिटतक   धीरधीरकिटतक   तींनाकिडनग।

$_0$घिडनगनगतिर   किटतकघिडनग   नगतिरकिटतक   नगतिरकिटतक।

$_3$धींऽनधीं   ऽनकत्   तिरकिटतकताऽ   ऽऽधीरधीरकिट। $_x$धा

कायदाः तीनताल

मुखः– $_x$धागेनाधा   तिरकिटधींन   धागेनागे   धींनागिना।

$_2$धागेतिरकिट   धींनागिना   धागेनागे   तींनाकिना।

$_0$ताकेनाता   तिरकिटतींन   ताकेनाके   तींनाकिना।

$_3$धागेतिरकिट   धींनागिना   धागेनागे   धींनागिना।

उपर्युक्त कायदे का जोड़ा रचनाः डॉ. शिवेन्द्रप्रताप त्रिपाठी

मुखः $_x$धागेतिरकिट   तकतकतिरकिट   धागेनागे   धींनागिना।

$_2$धागेनाधा   तिरकिटधींन   धागेनागे   तींनाकिना।

$_0$ताकेतिरकिट   तकतकतिरकिट   ताकेनाके   तींनाकिना।

$_3$धागेनाधा   तिरकिटधींन   धागेनागे   धींनागिना।[20]

रेल के रियाज़ हेतु एक रचना (लड़ी)

रचनाः पं. अनोखेलाल मिश्र

मुखः– $_x$धींनाकिटतक   धाऽतिरकिटतक   धाऽतिरकिटतक   धींनाकिटतक।

$_2$धाऽतिरकिटतक   धींनाकिटतक   धींनाकिटतक   धाऽतिरकिटतक।

$_0$तींनाकिटतक   ताऽतिरकिटतक   ताऽतिरकिटतक   तींनाकिटतक।

$_3$धाऽतिरकिटतक   धींनाकिटतक   धींनाकिटतक   धाऽतिरकिटतक।

रेलाः तीनताल

मुखः– $_x$धाऽतीट   धाधातीट   धागेदींऽ   नानातीट।

$_2$धातीटधा   तीटधाधा   तींनाकिटतक   ताऽतिरकिटतक।

$_0$ताऽतीट   तातातीट   ताकेतींऽ   नानातीट।

$_3$धातीटधा   तीटधाधा   तींनाकिटतक   ताऽतिरकिटतक।

'धीरधीर' बोल के रियाज़ हेतु;

तीनताल : (बोलपंक्ति)

$_x$धाऽऽधीर	धीरधीरकिटतक	धीरधीरकिटतक	ताऽतिरकिटतक।
$_2$धीरधीरकिटतक	धीरधीरकिटतक	धीरधीरकिटतक	ताऽतिरकिटतक।
$_0$ताऽऽतीर	तीरतीरकिटतक	तीरतीरकिटतक	ताऽतिरकिटतक।
$_3$धीरधीरकिटतक	धीरधीरकिटतक	धीरधीरकिटतक	ताऽतिरकिटतक।

बनारस घराने में गते अनान्य है।

कुछ उदाहरण;

ताल–तीनताल गत– मर्दानी गत (पारंपारिक रचना)

(सौजन्यः डॉ. शिवेन्द्रप्रताप त्रिपाठी, आग्रा)

$_x$घिनाधाऽ	ऽऽधाड	ऽऽधाऽ	ऽडधाऽ
धींनातिरकिट	धाऽतिरकिटतक	तींनातिरकिट	धाऽतिरकिटतक
$_0$घडॉऽन्धाऽतिर	किटतकक्डॉऽन्	ताऽतिरकिटतक	ताऽतिरकिटतक
धाऽतिरकिटतक	धीरधीरकिटतक	धीरधीरकिटतक	ताऽतिरकिटतक खाली

फरदगत – तीनताल

$_x$धाऽतीट	क्डधातीट	धातीटधा	घेगेतीट
घेगेतीट	तीटघेगे	तीटघेगे	दींऽऽऽ
$_0$नानातीट	नातीटना	तींनातीट	नानातीट
धीटधाऽ	घिडनगतेत्ऽ	ताऽतिरकिटताऽ	गेधिरकिटतक $_x$धा

बनारस में 'बाँट' याने मूल रचना (बंदिश) होती है, जिसके विस्तार में कायदें की तुलना में थोड़ी स्वतंत्रता होती है।

बाँट के कुछ उदाहरण–

धीना ऽधा तिरकिट धींना। तिरकिट धींना ऽधा तिरकिट।

तींना ऽता तिरकिट तींना। तिरकिट धींना ऽधा तिरकिट।

(सौजन्य– पं. भगवतशरण शर्मा इनके 'तालप्रकाश' इस ग्रंथ से प्राप्त, पृ.49)

ताल तीनताल–

$_x$धाड धागे तीट धाड। धाड धातीं नातीं नाड।

$_0$ताड ताते तीट ताड। धाड धातीं नातीं नाड।

$_x$धाऽतिरकिटधि	कीटगिन	धाडागिन	धींनाकता
$_0$ताऽतिरकिटधि	कीटगिन	धाडागिन	धींनाकता

तीनतालः रेला रचनाः पं. भैरव सहाय

मुखः	$_x$धाऽतिर	किटधागे	तिरकिट	धीरधीर
	$_2$किटघिड़	नगधागे	तिटकत	गदीगन

और खाली

तीनताल रेला

मुखः	$_x$घेडनग	तिटतिट	घेडनग	दिनतक
	$_2$तकदिन	तकतिट	घेडनग	दिनतक[21]

और खाली

(सौजन्य– पं. विजयशंकर मिश्र इनके 'तबला' इस ग्रंथ से प्राप्त, पृ. 3)

6.5.6. पंजा़ब घराना :

दिल्ली और पूरब इन दोनों घरानों के प्रभाव से पूर्णतः मुक्त, एक स्वतंत्र घराने के रूप में अपना अस्तित्व रखते हुए पंजाब घराने ने खुले बाज का स्वीकार किया। पंजाब घराने के मूलपुरूष एक उत्कृष्ट पखावजवादक थे लेकिन, इसी परंपराके एक श्रेष्ठ वादक कलाकार ने अपनी कल्पनाशक्ति एवं बुध्दिचातुर्य से तबले की विभिन्न नवनवीन रचनाओं का निर्माण कर पंजाब घराने का अलग अस्तित्व बनाया। पंजाब में विशेषतः लंबछड गतें, गतपरने, चक्रदार, रेलों का समावेश होता है। वर्तमान में, इस घराने में पेशकार तथा कायदे जैसे रचना प्रकारों के निर्मिति का पूर्ण श्रेय इस घराने के एक श्रेष्ठ कलाकार उस्ताद अल्लारखाँ साहब को जाता है। क्लिष्ट लयकारी, विविध जाती की रचनाएँ, विभिन्न दम की तिहाईयाँ, विशेषतः पौने के दम की तिहाई, विविध चलन, दिपचंदी अंग की 'पंजाबी चाले', आदि वादन प्रकार पंजाब में विशेष रूप से बजाये ंजाते है। पंजाब घराने के वादक, एक उत्कृष्ट कलाकार के साथ–साथ उत्कृष्ट रचनाकार भी है, जिसका उत्कृष्ट उदाहरण है– उस्ताद अल्लारखाँ साहब और उनके सुपुत्र खलिफा उस्ताद जाकिर हुसेन साहब।

तबले के रियाज़ हेतु पंजाब घराने की कुछ आदर्श बोलपंक्तियाँ एवं बंदिशे;

रचनाकार– (ताल–तीनताल कायदा)

उस्ताद अल्लारखाँ साहबः– (सौजन्यः श्री. स्वप्निल भिसेजी साभार प्राप्त)

प्रभु तो कण–कण में रूपको समाएँ है

जीव इस भेद को समझ नहीं पाये है।।

xधाधागधी टधीटधा गेनाधागे धींनागिना।

2तीटतीट धागेनाधा तीधागेना तींनाकिना।[22] +खाली

'तीट' बोल के रियाज़ हेतु आदर्श बोलपंक्ति :

रचनाः पं. योगेश समसी

तालः तीनताल

xधातीधाधा तीटतीट तीटधाती धाधातीट।

2तीटधाती धाधातीट धातीधागे तींनाकिना।

0तातीताता तीटतीट तीटताती तातातीट।

3तीटधाती धाधातीट धातीधागे धींनागिना।

'तिरकिट' इस अंत्यपद बोलसे पूर्ण होनेवाला कायदाः

रचनाः उस्ताद अल्लारखाँ साहब (सौजन्यः श्री. निखिल भगतजी से साभार प्राप्त)

ताल : तीनताल

मुख :–xधाऽघिडनगतक तिरकिटधाऽधाऽ धाऽघिडनगतक तिरकिटधाऽघिड।

2नगतकतिरकिट धाऽधाऽऽऽधाऽ धाऽधाऽधाऽघिड नगतकतिरकिट।

0ताऽकिडनगतक तिरकिटताऽताऽ ताऽकिडनगतक तिरकिटताऽकिड।

3नगतकतिरकिट धाऽधाऽऽऽधाऽ धाऽधाऽधाऽघिड नगतकतिरकिट।[23]

देहली शैलीपर आधारित एक कायदा;

रचनाः उस्ताद अल्लारखाँ साहब

ताल–तीनताल

मुखः– xधाऽतिरकिटतक तिरकिटधाऽतिर किटतकतिरकिट धातीधागे।

2धींनागिना धातीधागे धातीधागे तींनाकिना।

0ताऽतिरकिटतक तिरकिटताऽतिर किटतकतिरकिट धातीधागे।

3धींनागिना धातीधागे धातीधागे धींनागिना।

कायदा : तीनताल

रचनाः उस्ताद अल्लारखाँ साहब (सौजन्यः श्री. स्वप्निल भिसेजी सें साभार प्राप्त)

गुरू का तू धरले ध्यान गुरू के बिना

कबहु लीला इह समझ नहीं आवे है।।

x धात्रकधि कीटघिना धाऽनघि नाधात्रक।

0 धिकिटधि नाधातीधा गेनाधागे तींनाकिना। खाली

पंजाबी चक्रदारः तीनताल

कत्धाऽतिरकिटधाऽ घेगेतीटघेगेदींऽ

क्डधातीटधागेतीट धागेत्रकतूंनाकता

कतकघेतकधीन धागेत्रकतूंनाकता

धाऽऽऽधीरधीरकिटतक ताऽतिरकिटतकताऽकत्

तीऽटऽधाऽधीरधीर किटतकताऽतिरकिटतकताऽ

कत्तीऽटऽधाऽ धीरधीरकिटतकताऽतिरकिटतक

ताऽकत्तीऽटऽ धाऽ – चक्रदार ($13^{1/2}$X3)

पंजाबी चक्रदारः तीनताल (फरमाइशी चक्रदार)

धाऽकत कतधाऽ धीरधीरकिटतक ताऽतिरकिटतक

तिगदाऽऽती धातीक्डाँ ऽ

कतकधीरधीरकिटतक ताऽतिरकिटतकताऽत धाऽऽऽकतक

धीरधीरकिटतकताऽतिरकिटतक ताऽतधाऽऽऽ कतकधीरधीरकिटतक

ताऽतिरकिटतकताऽत धाऽऽऽ – चक्रदार ($13^{1/2}$X3)

कायदा : झपताल (तिस्त्र जाती)

(रचनाः मियाँ शौकत हुसेन–पंजाब) – देहली शैली

मुख :– x धातीटधीतीट धाधातीतीटधा।

2 तीटधातीटधी तीटधीटधीट धागेतींनाकिना। और खाली

प्रस्तुत, 'रियाज़ की आदर्श बोलपंक्तियाँ एवं बंदिशेः विविध घरानों कि दृष्टिकोन से', इस अध्याय में शोधार्थी ने रियाज़ हेतु आदर्श बंदिशे कि संकलन प्रस्तुति करने का प्रयास किया। तबला साधक के सर्वांगीण तैयारी तथा उन्नति एवं विकास के लिए इन बंदिशों का रियाज़ महत्त्वपूर्ण है, ऐसा शोधार्थी का मानना है।

लेकिन, इसके लिए गुरू का योग्य मार्गदर्शन तथा विद्यार्थी की प्रामाणिक मेहनत अत्यंत आवश्यक है, जिसके बगैर कुछ भी हासिल नहीं हो पायेगा। शोधार्थी का यह मानना है कि, गुरू के सहवास एवं उनके मार्गदर्शक में किया गया रियाज़ याने साधक के नियोजित ध्येय तथा यश की निश्चित प्राप्ति, साथ ही निश्चिंति भी। साधक ने अपने संकल्पित ध्येय की निश्चित पूर्ति के लिए प्रामाणिक रियाज़ करना अत्यंत आवश्यक है। साधक को कड़ी मेहनत तथा प्रामाणिक रियाज़ से ही तबला कला का सर्वांगीण ज्ञान हो पायेगा तथा उसकी सर्वागीण दृष्टिकोन से उन्नति, प्रगति होगी। केवल रियाज़ से ही सबकुछ हासिल हो सकता है, रियाज़ नही ंतो कुछ भी नहीं.....!

तबले के विभिन्न घराने याने तबले के साहित्य की अनमोल पूँजी है। प्रत्येक घराने के तबला वादक विद्वान–कलाकारों ने अपने–अपने विचारों से इस पूँजी को भलीभाँति सँवारा है। यें घराने यानी तबले की ओंर देखने के छह अलग–अलग दृष्टिकोन है। तबले के प्रत्येक घरानों के मूर्धन्य कलाकारों ने तबले के रियाज़ का एक आदर्श संगीत जगत के सामने रखा है। शोधार्थी की यह भावना है की, तबले के मूर्धन्य कलाकारों ने रची हुई अनेक सौंदर्यपूर्ण कलात्मक 'बंदिशे' यह केवल उनकी सृजनशीलता न होते हुए, उन्होंने अपने अनुभवों के आधारपर तबला जगत को दिए – हुए 'दृष्टांन्त' ही है। यह विचारपूर्ण बंदिशे यानी वादक कलाकारों की प्रभावी एवं सौंदर्यात्मक वादन कौशल्य की अभिव्यक्ति होती है। विश्व के अंततक, इन मूर्धन्य कलाकारों ने की हुई तबले की यह रियाझरूपी तपस्या चिरंतन स्मरण में रहेगी और भविष्य में तबला साधको के लिए सदैव प्रेरणा का एक स्त्रोत बन कर रहेगी।

पाद–टिप्पणीयाँ :

1. साक्षात्कार : श्रुति, सडोलीकर, ज्येष्ठ गायिका, दि. 16 नवं. 2019
2. साक्षात्कार : ज्येष्ठ तबलावादक श्री. महेश पाटील, इचलकरंजी, दि. 7 अप्रेल, 2019.
3. साक्षात्कार : नायगांवकर, आनंद, संगीताचार्य ज्येष्ठ तबलावादक, मंबई. दि. 16 नवंबर, 2019.
4. साक्षात्कार : कामत, सिध्देश, तबलावादक, मुंबई. दि. 28 फरवरी, 2020.
5. साक्षात्कार : माईणकर, सुधीर, ज्येष्ठ तबलागुरु व विचावंत, मुंबई. दि. 24 नवंबर, 2018.
6. साक्षात्कार : मुलगांवकर, अरविंद, ज्येष्ठ तबलागुरु व विचारवंत, मुंबई. दि. 24 जनवरी, 2018.
7. साक्षात्कार : गुलवाडी, ओंकार, ज्येष्ठ तबलावादक, (तबला कार्यशाला–वड़ोदरा) दि. 17 सितंबर, 2019
8. मुलगांवकर अरविंद, ''तबला'', मराठी, पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई, तृतीय संस्करण, 2016 पृ.156
9. साक्षात्कार : ज्येष्ठ तबलावादक श्री. महेश पाटील, इचलकरंजी, दि. 7 अप्रेल, 2019.
10. मुलगांवकर अरविंद, ''तबला'', मराठी, पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई, तृतीय संस्करण, 2016 पृ.157
11. मोघे, उमेश, ''देहली का तबला'', हिंदी, प्रकाशकः श्री. उमेश वि. मोघे, पुणे, प्रथम संस्करण, 2019, पृ. 117.
12. साक्षात्कार : मार्गदर्शक गुरु, डॉ. प्रो. अजय अष्टपुत्रे, (तबलाः कार्यशाला–पुणे) दि. 16 / 17 अगस्त, 2019.
13. वही, साक्षात्कारः दि. 16 / 17 अगस्त, 2019.
14. साक्षात्कार : मुलगांवकर, अरविंद, ज्येष्ठ तबलागुरु व विचारवंत, मुंबई. दि. 24 जनवरी, 2018.
15. साक्षात्कारः दाते, नंदकिशोर, तबलावादक, वडोदरा, दि. 14 अक्टूबर, 2019.

16. मुलगांवकर, अरविंद, ''इजाजत'', हिंदी, अभिनंदन प्रकाशन, कोल्हापूर, प्रथम संस्करण, 2008. पृ. 95
17. मुलगांवकर अरविंद, ''तबला'', मराठी, पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई, तृतीय संस्करण, 2016 पृ.315.
18. दंडगे, आमोद, ''सर्वांगीण तबला'', मराठी, भैरव प्रकाशन, कोल्हापुर, चौथा संस्करण, 2017, पृ. 140.
19. साक्षात्कारः जोशी, अरुण, ज्येष्ठ तबलावादक, कोल्हापुर, दि. 8 नवंबर, 2019.
20. साक्षात्कारः त्रिपाठी, शिवेंद्रप्रताप, तबला कार्यशाला, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर. दि. 10 फरवरी, 2020.
21. मिश्र, विजयशंकर, ''तबला पुराण'', हिंदी, कनिष्क पब्लिशर्स्, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2012. पृ.3.
22. साक्षात्कारः भिसे, स्वप्निल, तबलावादक, मुंबई, दि. 8 अक्टूबर, 2019.
23. साक्षात्कारः भगत, निखिल, तबलावादक, कोल्हापुर. दि. 9 मार्च, 2020.